

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 03, (अगस्त, 2024)
पृष्ठ संख्या 58-63

आधुनिक काल में जैविक खेती की आवश्यकता

केशरीनाथ त्रिपाठी¹, विकास मिश्रा², शिवराज सिंह धाकड़³ एवं संजीव पाण्डेय¹

¹सहायक प्राध्यापक, एल एन सी टी विश्वविद्यालय,

भोपाल- मध्य प्रदेश -462042

²सहायक प्राध्यापक, महर्षि उत्तम सामाजिक विज्ञान केंद्र

सलकनपुर सीहोर- मध्य प्रदेश -466446

³सहायक प्राध्यापक,

माता भगवती देवी देव संस्कृति महिला महाविद्यालय सीसवाली,

बारां, राजस्थान - 325206, भारत।



Email Id: keshrinath.tripathi@gmail.com

जैविक खेती में खेती करने की ऐसी तकनीकों और विधियां शामिल होती हैं जो सतत कृषि के माध्यम से पर्यावरण, मनुष्य और जानवरों की रक्षा करने का प्रयास करती हैं। जैविक खेती के उत्पादकों को उर्वरीकरण और फसल की रक्षा दोनों के लिए जैविक पदार्थों के अलावा कोई भी अन्य चीज प्रयोग करने की अनुमति नहीं होती। उर्वरीकरण विधियों के रूप में, वे मुख्य रूप से गोबर की खाद, कम्पोस्ट, या विशेष जैविक सिंथेटिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं। फसल की रक्षा के उपायों के रूप में, ज्यादातर जालों और प्राकृतिक शिकारियों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की खेती में बहुत ज्यादा मेहनत की जरूरत पड़ती है और इससे होने वाली पैदावार भी पारंपरिक खेती की तुलना में काफी कम होती है। हालाँकि, जैविक उत्पादक अपने उत्पादों को बाजार में पारंपरिक उत्पादों से ज्यादा महंगे दामों पर बेच सकते हैं।

जैविक खेती की परिभाषा

यूरोपीय संसद ब्रुसेल्स के अधिनियम, 27 अप्रैल 2018, के अनुसार, जैविक खेती खेत के प्रबंधन और खाद्य उत्पादन की एक समग्र प्रणाली है, जो सबसे अच्छे पर्यावरणीय और जलवायु गतिविधि के अभ्यासों, उच्च स्तर की जैव

विविधता, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पशु कल्याण के उच्च मानकों के प्रयोग और प्राकृतिक पदार्थों और प्रक्रियाओं के प्रयोग से उत्पादित उत्पादों के लिए उपभोक्ताओं की बढ़ती हुई संख्या के मांग के अनुरूप उच्च उत्पादन मानक शामिल करती है।

जैविक खेती में किसान, अपनी रोजमर्रा की दिनचर्या में सभी इनपुट सीमित करने की और पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, जहाँ तक मिट्टी के प्रबंधन की बात आती है, जैविक किसान मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी को कम करने के लिए ज्यादातर फसल चक्रीकरण पर निर्भर रहते हैं। वे मुख्य रूप से, कानूनी रूप से निर्देशित मात्राओं में जैविक खाद, और नाइट्रोजन बूस्टर के रूप में नाइट्रोजन-बाइंडिंग बैक्टीरिया का इस्तेमाल करते हैं।

जहाँ तक खरपतवार प्रबंधन की बात है, वे पलवार करना, हाथ से खरपतवार हटाना, और जुताई करना पसंद करते हैं। कई मामलों में, वे खास तौर पर जैविक खेती के लिए डिजाइन किये गए, विशेष उपकरण के प्रयोग से खरपतवार हटाते हैं। जैविक किसान सिंथेटिक रसायनों के इस्तेमाल को कम से कम करने की

कोशिश करते हैं। इसलिए, फसल की सुरक्षा के लिए, वे मुख्य रूप से जाल और फसल के कीड़ों के लिए प्राकृतिक शिकारी जैसे उपाय प्रयोग करते हैं।

किसी खेत को जैविक के रूप में कैसे प्रमाणित किया जा सकता है?

प्रत्येक देश में जैविक खेती विशेष रूप से कानून द्वारा वर्णित और परिभाषित की जाती है, और 'जैविक' शब्द का कोई भी व्यावसायिक प्रयोग सरकार के नियंत्रण के अधीन है। प्रत्येक भावी जैविक किसान को जैविक किसान के रूप में प्रमाणित होने के लिए कुछ विशेष गतिविधियों का अनुसरण करना (और बचना) चाहिए। कानून का थोड़ा सा भी उल्लंघन जैविक स्थिति को समाप्त कर सकता है।

अगर आप जैविक खेती से जुड़ना चाहते हैं तो आप अपने क्षेत्र में प्रमाणीकरण निकाय में आवेदन कर सकते हैं। अगर आप मानकों को पूरा करते हैं तो एक निश्चित अवधि (उदाहरण के लिए अगर आप पेड़ उगाते हैं तो 3-4 साल) के बाद आपको अधिकारियों द्वारा स्वीकृति मिल जाएगी। जो किसान नियमों का पालन करते हैं, वो अपने उत्पादों को बाजार में "प्रमाणित जैविक" के रूप में बेच सकते हैं और अपनी पैकेजिंग में आधिकारिक जैविक की मुहर दिखा सकते हैं, जिसकी वजह से उत्पादों को ऊँचे दामों पर बेचा जा सकता है।

जैविक खेती के सिद्धांत

आई एफ ओ एम ए एम (इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर मूवमेंट्स) के अनुसार, जैविक खेती के सिद्धांतों को नीचे वर्णित किया गया है:

- जैविक खेती को एक और अविभाज्य के रूप में मिट्टी, पौधों, पशुओं, और मनुष्यों के स्वास्थ्य को बनाये रखना और सुधारना चाहिए।
- जैविक खेती सजीव पारिस्थितिकी प्रणालियों और चक्रों पर आधारित होनी चाहिए, इसे उनके साथ काम करना

चाहिए, उनका अनुकरण करना चाहिए और उन्हें बनाए रखने में मदद करनी चाहिए।

- जैविक खेती ऐसे संबंधों पर आधारित होनी चाहिए, जो पर्यावरण और जीवन की प्रक्रियाओं के संबंध में न्यायसंगतता सुनिश्चित करते हैं।
- जैविक खेती को वर्तमान और भावी पीढ़ियों के स्वास्थ्य एवं कल्याण और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सावधानी के साथ और जिम्मेदार तरीके से प्रबंधित किया जाना चाहिए।

जैविक खेती के सामान्य उद्देश्य हैं:

- एग्रोकेमिकल अवशेषों से रहित, सुरक्षित और पौष्टिक खाद्य पदार्थ का उत्पादन
- सतत प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरण की संपूर्ण सुरक्षा (मिट्टी और जलीय जीवों की सुरक्षा, जैव विविधता का आश्वासन)
- ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों (जैसे पानी, मिट्टी, जैविक पदार्थ) का सतत प्रयोग
- उपजाऊपन और मिट्टी की जैविक गतिविधि का संरक्षण और वृद्धि
- हानिकारक रसायनों के खतरे से किसानों के स्वास्थ्य की रक्षा
- जानवरों का स्वास्थ्य एवं कल्याण सुनिश्चित करना
- जैविक उत्पादों के लिए उत्पादन तकनीक और नियंत्रण उपायों के सटीक नियम और कानून, राष्ट्रीय और सामुदायिक कानून पर निर्भर करते हैं और प्रत्येक देश में अलग-अलग हो सकते हैं।

हालाँकि, जैविक खेती की कुछ मूलभूत कार्यप्रणालियों और विधियों को नीचे सूचीबद्ध किया गया है:

जैविक खेती की कार्य प्रणालियों के उदाहरण:

फसल चक्रीकरण (एक ही फसल लगाने से बचें जिसकी वजह से मिट्टी के पोषक तत्व धीरे-धीरे खत्म हो जाते हैं)

- हरी खाद का प्रयोग
- गोबर की खाद और सब्जियों के अवशेष (कम्पोस्ट) का प्रयोग
- जैविक सामग्रियों का पुनर्चक्रण
- वैकल्पिक पौधों की सुरक्षा (प्राकृतिक दुश्मन) और पोषण उत्पादों का प्रयोग
- क्षेत्र की विशेष परिस्थितियों के अनुकूल पशुओं की स्थानीय किस्मों और नस्लों का प्रयोग
- पशु कल्याण के उच्च मानक का रखरखाव
- आनुवांशिक रूप से संशोधित जीवों (जीएमओ) साथ ही साथ जीएमओ द्वारा या इसके साथ उत्पादित उत्पादों के प्रयोग से बचना।

जैविक खेती का सामान्य सिद्धांत

एक सामान्य सिद्धांत के रूप में, भावी जैविक किसान को बंद प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र (न्यूनतम इनपुट और आउटपुट के साथ) के सिद्धांत को पूरी तरह से समझने की जरूरत होती है और सबसे पहले पारिस्थितिकी तंत्र में पहले से मौजूद सभी स्वस्थ सामग्रियों का प्रयोग करने की कोशिश करनी चाहिए। इससे हमारा मतलब है कि जैविक खेत को एक अलग पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में माना जाता है, जहाँ बहुत कम इनपुट और आउटपुट होते हैं, और अधिकांश तत्वों का इस खेत के अंदर ही पुनर्चक्रण किया जाता है, जिससे सततता सुनिश्चित होती है। उदाहरण के लिए, मान लीजिये हम जैतून के पेड़ के जैविक बगीचे का प्रबंधन करते हैं। छंटाई के बाद, जैविक किसान काटी गयी शाखाओं को फेंकने या जलाने के बजाय (जैसा कि आमतौर पर पारंपरिक खेती में होता है), उन्हें विशेष मशीनरी से कुचल देते हैं, पेड़ की शाखाओं को विघटित किया जाता है और बुरादे को मिट्टी पर फेंक दिया जाता है। इसके बहुत लाभकारी प्रभाव होते हैं, क्योंकि यह माना गया है कि मिट्टी में मिलाई गयी जैतून की लकड़ी (50: नमी के साथ) के हर 1000

किग्रा में 4 किलोग्राम नाइट्रोजन, 0.5 किलोग्राम फॉस्फोरस, 4 किलोग्राम पोटैशियम, 5 किलो कैल्शियम और 1 किलोग्राम मैग्नीशियम मौजूद होता है (अमीरांते और अन्य, 2002)। इस तरह, हमारे पास कम से कम संभव इनपुट और आउटपुट होते हैं और इससे जैतून के बगीचे में तत्वों के पुनर्चक्रण को बढ़ावा मिलता है। जाहिर तौर पर, ऐसे भी मामले होते हैं जिनमें जैविक बगीचों से पेड़ की शाखाओं को तुरंत हटा दिया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, पेड़ में कीड़े या रोग लगने पर।

प्रदूषण को समझना और इससे बचाव

आसपास के खेतों में प्रयोग की जाने वाली कुछ कार्यप्रणालियों की वजह से हमारे जैविक खेत में प्रदूषण हो सकता है। उदाहरण के लिए, अगर हमारा पड़ोसी पारंपरिक किसान है और किसी तूफान वाले दिन कीटनाशक का छिड़काव करता है तो जैविक खेत प्रदूषित हो सकता है। हालाँकि, यह प्रदूषण केवल कीटनाशक के कारण नहीं होता। छंटाई या फसल की कटाई के दौरान भी, मशीन (जैसे: मशीन से तेल का रिसाव) का प्रयोग करने मात्र से मिट्टी या पानी के स्रोत प्रदूषित होने का जोखिम बढ़ जाता है। किसानों को उन सभी जोखिमों पर सावधानी से विचार करना चाहिए, जिनकी वजह से जैविक खेत प्रदूषित हो सकता है और उनका उचित उपाय करना चाहिए।

पड़ोस के खेत से कीटनाशक प्रदूषण के जोखिम से बचने के लिए, किसान प्राकृतिक बचाव वाले पौधों के प्रयोग पर विचार कर सकते हैं। इस प्रकार के पौधे लगाने से किसान को एक सुरक्षित क्षेत्र बनाने और हवा के माध्यम से कीटनाशक प्रदूषण के जोखिम को कम करने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, किसान बहने वाले पानी की दिशा मोड़ सकता है। यह विधि बहने वाले पानी की वजह से होने वाले कीटनाशक प्रदूषण के जोखिम को कम करेगी। जैविक खेती की बात आने पर, जीएमओ भी एक प्रदूषण कारक हो सकते हैं। जैविक खेती के लिए प्रयोग किये जाने वाले खेतों के फसल इतिहास का निरीक्षण करना बहुत जरूरी है।

जैविक खेती के लिए संभावित खेतों में फसल का इतिहास जीएमओ से मुक्त होना चाहिए। किसान अनुपचारित बीजों का प्रयोग करने पर भी विचार कर सकते हैं। इसके अलावा, बीजों को उन व्यापारियों से खरीदा जाना चाहिए जो प्रदूषण उत्पादन में शामिल नहीं होते हैं। अंत में, सभी खेती और कटाई के उपकरण, साथ ही साथ जैविक खेती में प्रयोग किए जाने वाले सभी परिवहन और भंडारण सुविधाओं का प्रयोग पारंपरिक किसानों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए, अन्यथा हम प्रदूषण का खतरा बढ़ा देते हैं। हालाँकि, ये बस कुछ सामान्य गतिविधियाँ हैं, जिनका अपना खुद का शोध किये बिना पालन नहीं किया जाना चाहिए। आप अपने स्थानीय अधिकारी और अपने प्रमाणन सहयोगी से सलाह ले सकते हैं।

जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाले उर्वरक

जैविक खेती में ज्यादातर रासायनिक उर्वरकों की अनुमति नहीं है (जैसे, मिनरल नाइट्रोजन उर्वरक)। इसके लिए केवल जैविक खेती में प्रयोग करने के लिए स्वीकृत उर्वरकों की ही अनुमति दी जाती है।

हालाँकि, पौधे के विकास के लिए मिट्टी का उचित उपजाऊपन महत्वपूर्ण है। पौधे के विकास चरणों के दौरान ज्यादातर नाइट्रोजन, इसके अलावा फॉस्फोरस और पोटैशियम की भी जरूरत होती है। चूँकि पारंपरिक उर्वरकों की अनुमति नहीं होती, इसलिए कुछ सबसे अच्छे जैविक उर्वरकों में शामिल हैं:

हरी खाद

खेत में किसी वार्षिक या सदाबहार पौधे (रिजका, शिंबी) की बोवाई के साथ हरी खाद का उत्पादन शुरू होता है। इस विधि से मिट्टी के उपजाऊपन और संरचना में सुधार होता है। यह पानी का अवशोषण और मिट्टी की नमी बढ़ाता है। इस विधि को खरपतवार पर नियंत्रण की विधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इस कारण से, नाइट्रोजन-फिक्सिंग पौधों, जैसे रिजका, क्रीपिंग क्लोवर, बाकला, ल्यूपिन,

मटर, चना आदि का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। जई और बाजरा जैसे अनाज भी प्रयोग किये जाते हैं। चूँकि, ये पौधे (विशेष रूप से फलियाँ) काफी मात्रा में पोषक तत्व अवशोषित करते हैं, इसलिए मिट्टी में इनका समावेश पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। अगर उत्पादक इस तकनीक का प्रयोग करने का फैसला करता है, तो इसे उगाने के लिए ऐसी सामग्री (बीज) का प्रयोग जरूरी है जो आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों की श्रेणी से संबंधित नहीं है।

कम्पोस्ट

कम्पोस्टिंग एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें सूक्ष्मजीवों, जैसे बैक्टीरिया, के विशेष समूह जैविक पदार्थों को खाद में बदल देते हैं। प्रक्रिया पूरी होने के बाद, कम्पोस्ट तैयार हो जाता है। कम्पोस्ट में जैविक पदार्थों, पोषक तत्वों और सूक्ष्म मात्रा में मौजूद तत्वों का मिश्रण शामिल होता है। यह प्राकृतिक उर्वरीकरण का एक तरीका है, जो मिट्टी की गुणवत्ता को बहुत अच्छा बनाता है। हालाँकि, कम्पोस्ट डालने से पहले आपको अपने स्थानीय लाइसेंस-प्राप्त कृषि विज्ञानी से परामर्श करना चाहिए।

गोबर की खाद

गोबर की खाद का प्रयोग करना जैविक उर्वरीकरण का एक अन्य तरीका है। जैविक खेतों में आमतौर पर गोबर की खाद का इस्तेमाल किया जाता है। यह खाद अच्छी तरह सड़ी हुई होनी चाहिए, जिसे पौधों के चारों तरफ डाला जा सकता है। हालाँकि, गोबर की खाद डालने से पहले आपको अपने स्थानीय लाइसेंस-प्राप्त कृषि विज्ञानी से परामर्श करना चाहिए। मिट्टी को ज्यादा उपजाऊ बनाने और खरपतवार नियंत्रित करने के लिए अन्य किसान मिट्टी की सतह को सूखे पौधों से ढँक देते हैं। इस विधि को पलवार के रूप में जाना जाता है।

आमतौर पर, हाइड्रोपोनिक उत्पादन की अनुमति नहीं होती है। हाइड्रोपोनिक एक ऐसी

विधि है, जिसके अनुसार, उत्पादक पौधे उगाने के लिए मिट्टी का इस्तेमाल नहीं करते। इसके बजाय, वे पोषक तत्वों के घोल से भरपूर एक निष्क्रिय माध्यम का इस्तेमाल करते हैं, जहाँ वे अपने पौधों की जड़ें लगाते हैं। ज्यादातर देशों के प्राधिकरणों के अनुसार, जैविक फसलों को सजीव मिट्टी में उगाया जाना चाहिए। हालाँकि, संयुक्त राज्य के प्राधिकरणों ने हाल ही में कुछ हाइड्रोपोनिक खेतों को अपने उत्पाद को जैविक के रूप में लेबल करने की अनुमति दी है।

जैविक खेती में फसल की सुरक्षा और खरपतवार नियंत्रण— जैविक कीट और रोग प्रबंधन

जैविक खेती में, ज्यादातर रासायनिक कीटनाशकों, फफूंदनाशकों, शाकनाशकों आदि की अनुमति नहीं है, जब तक कि उन्हें जैविक खेती में प्रयोग के लिए अधिकृत नहीं किया गया है। पर्यावरणीय विधियाँ कीड़ों और रोग के प्रकोप को रोक सकती हैं।

कीड़ों, रोग या खरपतवार से होने वाली किसी भी क्षति की रोकथाम मुख्य रूप से निम्न पर आधारित है:

- प्राकृतिक दुश्मनों का प्रयोग (उदाहरण के लिए, गुबरैला)
- प्रतिरोधी प्रजातियों और किस्मों का चयन
- फसल चक्रीकरण
- पेड़ की खेती की बात आने पर, खेती की उचित तकनीकें, जैसे उचित छंटाई।
- हमारी मुख्य फसल के बीच में कुछ पौधों (जैसे, शिंबी) की बोवाई। कुछ पौधे (जैसे, शिंबी और कुछ ट्रिफोलियम प्रजातियाँ) प्राकृतिक रूप से खरपतवार का विकास कम करने के लिए मशहूर हैं।

इसके अलावा, किसान बोवाई के लिए ऐसे समय का चयन कर सकते हैं, जो कीटों के प्रकोप को रोकती और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करती है। रोग-रहित बीजों और रोपाई सामग्रियों की भी जरूरत होती है। आमतौर पर, जैविक किसानों को स्थानीय बीज या प्रजातियाँ

चुनने की सलाह दी जाती है, जो स्थानीय परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

जैविक पशुपालन

जैविक पशुपालन का उद्देश्य, जानवरों को स्वस्थ और सहज रखना और पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन विधियाँ स्थापित करना है। इसके परिणामस्वरूप, उच्च-गुणवत्ता वाले उत्पादों का उत्पादन होता है, और साथ ही, पशुपालन करने वाले किसान पशु कल्याण के मानकों को पूरा कर पाते हैं। जैविक पशुपालन करने का अर्थ है, कुछ विशेष नियमों का कड़ाई से पालन करना। ये नियम जानवरों की गरिमा, कल्याण और पोषण संबंधी जरूरतों की रक्षा करते हैं, साथ ही ये लोगों में विश्वास भी सुनिश्चित करते हैं।

इन सभी मांगों को पूरा करने के लिए, जैविक मवेशियों का जैविक खेतों में पालन-पोषण किया जाना चाहिए और उन्हें जैविक चारा खिलाया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि उनके चारे में शामिल की गयी सभी सामग्रियाँ जैविक होनी चाहिए। इसके अलावा, कई जैविक पशुपालन करने वाले किसान जैविक चारा तैयार करने के लिए खुद चारे की फसल की खेती करते हैं।

किसानों को स्वस्थ नस्लों वाले मवेशियों का चयन करना चाहिए, जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढाल सकें। इसलिए कई मामलों में, वे केवल स्थानीय प्रजातियों का चुनाव करते हैं। पशुओं के कल्याण का ध्यान रखना बेहद महत्वपूर्ण है। इसलिए, पशु स्वास्थ्य और सुरक्षा के संबंध में कर्मचारियों के पास सभी जरूरी मूलभूत जानकारी और कौशल मौजूद होने चाहिए। ज्यादातर मामलों में, किसी भी जानवर को पिंजरे या बक्से के अंदर नहीं रखा जाना चाहिए। जानवरों को अस्तबल के बाहर जाने में सक्षम होना चाहिए और उनके पास चारागाह की व्यवस्था होनी चाहिए। मुर्गी-पालन में पक्षियों के पास अपने जीवन के ज्यादातर समय में खुले स्थान की सुविधा होनी चाहिए (अपने स्थानीय प्राधिकरण और अपने प्रमाणन निकाय

से पूछें)। जैविक खेती में, कुछ पशुओं को समुदायों में रखा जाना चाहिए, जैसे वो प्रकृति में रहते हैं। उन्हें बाँधने या अकेला रखने की अनुमति नहीं होती, जब तक कि उनकी अपनी रक्षा के लिए इसका निर्देश नहीं दिया जाता है। ऐसी स्थिति में भी उन्हें केवल एक सीमित समय के लिए अकेले रखा जाना चाहिए।

जैविक पशुपालन में हॉर्मोन, विकास कारक, और सिंथेटिक एमिनो एसिड जैसे पदार्थ ज्यादातर स्वीकार नहीं किये जाते हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि हम जानते हैं, पारंपरिक पशुपालन में, पशुपालक उचित प्रजनन दर पाने के लिए हॉर्मोन पर आधारित उपचार प्रयोग कर सकते हैं। जैविक पशुपालन में किसान ऐसा नहीं कर सकते, जब तक कि ऐसे पदार्थ का प्रयोग किसी जानवर के उपचार के लिए नहीं किया जाता है। ऐसे मामले में, जानवर को पुआल या सोने की उचित व्यवस्था के साथ, पर्याप्त रूप से बड़े स्थान में अलग रखा जाना चाहिए।

जैविक मधुमक्खी-पालन

जैविक मधुमक्खी-पालन जैविक पशुपालन से ज्यादा कठिन हो सकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम मधुमक्खी जैसे उड़ने वाले जीव को पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर सकते हैं, और इसलिए हम उन्हें पारंपरिक खेतों से फूलों का रस लेने से नहीं रोक सकते हैं। हालाँकि, ऐसी संभावना को कम करने के लिए मधुमक्खी-पालकों को कुछ चीजें करनी चाहिए।

सबसे पहले, जैविक पशुपालकों को मधुमक्खी पालन के लिए ऐसे स्थानों का चयन करने के बारे में सोचना चाहिए, जहाँ फूलों का रस और पराग के स्रोत मुख्य रूप से जैविक फसलें हों। इस तरह, वो संदूषण के खतरे को कम कर सकते हैं। अगर मधुमक्खियों को खिलाने की जरूरत पड़ती है (केवल तभी जब प्राकृतिक संसाधनों की कमी की वजह से कालोनी का जीवन खतरे में होता है) तो मधुमक्खी की कालोनी को केवल जैविक आहार

(जैविक शहद, या चीनी) ही दिया जाना चाहिए।

मौसम खत्म होने पर, मधुमक्खी के छत्तों में पर्याप्त मात्रा में शहद और पराग मौजूद होना चाहिए, ताकि मधुमक्खियाँ सर्दियों में बची रह सकें। शहद निकालने की गतिविधियों के दौरान उत्पादक मधुमक्खियों को दूर करने के लिए सिंथेटिक रासायनिक विकर्षक का इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। जहाँ तक मधुमक्खियों के रोगों के इलाज की बात आती है, ज्यादातर रासायनिक उपचार मना हैं। इसके लिए एक अपवाद है, जहाँ वरोआ दीमक लगने के कुछ मामलों में कुछ पदार्थों की अनुमति दी जा सकती है। ज्यादा जानकारी के लिए आप अपने स्थानीय प्राधिकरण या अपने स्थानीय प्रमाणन निकाय से संपर्क कर सकते हैं।

निष्कर्ष: जैविक किसान बनें या न बनें?

पर्यावरणीय या आर्थिक दृष्टिकोण दोनों से ही, जैविक और पारंपरिक खेती के बीच चुनाव करने का फैसला आसान नहीं है। कुछ किसान जैविक खेती का चुनाव इसलिए करते हैं क्योंकि यह प्राकृतिक उत्पादों के उत्पादन के उनके सिद्धांत के अनुरूप होती है। हालाँकि, बहुत सारे जैविक किसान कीमतें, आय और खर्च जोड़ने के बाद अपना चुनाव करते हैं। यह निश्चित है कि कुछ किसान लागत में मुकाबला नहीं कर सकते हैं। उनकी जमीन काफी छोटी हो सकती है या उन्हें सभी लागतें नियंत्रित करने का एवं आकर्षक दाम पर एक औसत उत्पाद उत्पन्न करने का अनुभव नहीं सकता है। इसलिए, कई किसान जैविक खेती चुनते हैं, क्योंकि वो गुणवत्ता पर दांव लगाते हैं। वे एक छोटी मात्रा में उच्च-गुणवत्ता वाला उत्पाद उत्पन्न करने की योजना बनाते हैं जिसे ऊँचे दामों पर बेचा जा सकता है। उनमें से कुछ इसमें सफल होते हैं, जबकि दूसरे नहीं हो पाते। कई मामलों में, सफल होने के लिए, जैविक खेती में बहुत ज्यादा शोध, विशेष प्रबंधन, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, और थोड़े अनुभव की जरूरत पड़ती है।